जंगल कथा निर्मल जल

विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी

राहुल का गांव जंगल के बहुत पास में था। गांव के बाहर निकलने पर कुछ ही दूरी पर पहाड़ियों की एक कतार दिखाई देने लगती थी। उनमें से किसी भी पगडण्डी पर चल कर कुछ ही समय में जंगल में पहुंचा जा सकता था। जंगल में बड़ी संख्या में वृक्ष लगे थे। आसानी से भोजन मिल जाने के कारण अनेक प्रकार के जीव उस जंगल में रहते थे हिरण, गेंडा, तेंदुआ, दरियाई घोड़ा, हाथी, जंगली भैंसा के साथ और कई प्रकार के जीव रहते थे।

गांव के लोग जंगल से अपने काम की वस्तुएं लेकर आया करते थे। किसी जंगली जीव ने कभी भी किसी व्यक्ति को हानि नहीं पहुंचाई थी। राहुल का जंगल में आना-जाना लगा ही रहता था। राहुल के पिता जगवीर जंगलपाल के पद पर नियुक्त थे। जंगल तथा जंगल के जीवों की रक्षा करना उनका कार्य था।

राहुल बचपन से ही पिता के साथ जंगल में जाने लगा था। उम्र बढ़ने के साथ राहुल का जंगल के साथ लगाव बढ़ता ही गया था। स्कूल समय के बाद राहुल का अधिकांश समय जंगल में ही बीतता था। जंगल के कई जीव तो राहुल के साथ-साथ ही बड़े हुए थे। राहुल की उनमें दोस्ती हो गई थी। राहुल जब उनको पुकारता वे उसके पास चले आते थे। राहुल स्नेह से उनकी पीठ पर हाथ फेरता तो वे जीव खुशी प्रकट करते थे।

गांव के स्कूल की पढ़ाई पूरी कर राहुल शहर के स्कूल में पढ़ने लगा था। अब राहुल का जंगल में आना-जाना कम हो गया था। छुट्टी के दिन राहुल घर आता तो जंगल का चक्कर जरूर लगाता था। इस बार राहुल जंगल में गया तो देखा कि उसका प्रिय गेंडा मरा पड़ा था। राहुल ने पास जाकर देखा। गेंडे के शरीर पर किसी हथियार से किए घाव का कोई निशान नहीं था। राहुल ने पिता जगवीर से गेंडे के मरने का कारण पूछा।

जंगलों में जानवरों को भोजन सहजता से प्राप्त हो जाता है

"कुछ दिनों से मैं जंगल में जीवों को मरता देख रहा हूँ। कुछ दूरी पर दो हिरण भी मरे पड़े हैं। मैंने शहर के कार्यालय को फोन कर सब कुछ बताया था। डॉक्टर का अनुमान था कि एंथ्रेक्स बीमारी से जीवों की मौत हुई होगी। फिर शहर से एक जाँचदल आया। जाँचदल मरे हुए जीवों के फोटो, खून आदि के नमूने आदि ले गया था। नमूनों की जांच से पता चला कि जीवों की मौत का कारण एंथ्रेक्स नहीं है। वैज्ञानिक अभी मौत का कारण समझ नहीं पाए हैं। इधर जानवर हर दिन मरते जा रहे हैं।" राहुल के पिता जगवीर ने बताया। फिर तो मुझे ही कुछ करना होगा। मेरे मित्र रोहन की माता डॉ. सरोज एक अच्छी वैज्ञानिक है। मुझे विश्वास है कि वे जरूर समस्या का हल निकाल लेंगी" राहुल ने पिता से कहा। दूसरे

दिन शहर पहुंचते ही राहुल अपने मित्र रोहन के यहां पहुंचा। राहुल ने रोहन की माता डॉ. सरोज को जंगल का पूरा किस्सा कह सुनाया।

"शाबाश राहुल, जंगल के जीवों में तुम्हारी इतनी रूचि देख कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। तुम्हें यह जान कर खुशी होगी कि वन विभाग ने तुम्हारे इस गांव के जंगल की फाईल हमारी प्रयोगशाला को भेजी है। मैंने पूरी फाईल आज ही पढ़ी है। उम्मीद

जानवरों की मृत्यु का कारण पानी पर तैरती जहरीली नीली-हरी शैवाल

है जंगल का हत्यारा जल्दी ही हमारे सामने होगा मैं आज ही तुम्हारे पिता जी से फोन पर और जानकारी प्राप्त करूंगी। आवश्यकता हुई तो हमें जंगल में भी जाना होगा।" डॉ. सरोज ने कहा।

दूसरे ही दिन डॉ. सरोज रोहन व राहुल को लेकर गांव पहुंच गई। डॉ. सरोज को देखकर राहुल के पिता जगवीर बहुत प्रसन्न हुए, बोले "अच्छा हुआ जो आप आ गई। जानवरों के मरने की संख्या बढ़ती जा रही है। कुछ समझ नहीं आ रहा कि कौन है इनका हत्यारा?"

"अब तक की जांच से मुझे लगता है कि जंगल में पीने के पानी में जहर मिल गया है" डॉ. सरोज बोली।

"ऐसा कैसे हो सकता है? मैं पूरा ध्यान रखता हूँ। जंगल में बाहर से कोई नहीं आया। गांव का कोई व्यक्ति ऐसा गलत काम नहीं कर सकता" राहुल के पिता ने कहा।

"मैंने कब कहा कि किसी व्यक्ति ने जहर मिलाया है? मेरा मानना है कि जहर वहीं पानी में पैदा हो रहा है।" डॉ. सरोज ने बात स्पष्ट करते हुए कहा।

"यह कैसे हो सकता है। सभी जीव एक ही तालाब का पानी पी रहे हैं कुछ मर रहे हैं, कुछ नहीं मर रहे हैं?" राहुल के पिता ने फिर शंका प्रकट की।

"यह तो मैं उस स्थान पर जाकर ही दिखा सकती हूं" डॉ. सरोज ने कहा। सभी वन की ओर चल दिए।

"यही वह तालाब है जहां सभी जीव पानी पीते हैं। दो वर्ष पूर्व ही इसे बनाया गया था ताकि जानवरों को पानी के लिए अधिक दूर नहीं जाना पड़े।" एक ऊँचे स्थान से तालाब दिखाते हुए राहुल के पिता जगवीर ने कहा।

बड़ी मात्रा में नीली-हरी शैवाल पानी की सतह पर तैर रही थी। शैवाल के कारण पूरे तलाब का पानी हरा दिखाई दे रहा था।

"रोहित व राहुल क्या तुम जंगल के हत्यारे को पकड़ने में मदद के लिए तैयार हो?" डॉ. सरोज ने बच्चों की ओर देख कर प्रश्न किया।

"हाँ हम तैयार हैं। हमें करना क्या है?" रोहित ने प्रश्न किया।

"तुम्हें अधिक कुछ नहीं करना है। यहां बैठ कर जीवों की विभिन्न जातियों को पानी पीते देखना है। उनके पानी पीने की आदत के अन्तर का पता लगाना है?" डॉ. सरोज ने कहा।

"इस बात के लिए बच्चों को कष्ट क्यों देती हो? इन्हें दिन भर यहां बैठना होगा। सभी जीव एक साथ तो पानी पीने आते नहीं।" जगवीर ने कहा।

"अगर आपको अन्तर मालूम है तो फिर हत्यारा आपके सामने हैं। पानी पर तैर रही नीली-हरी शैवाल ही जंगल का हत्यारा है। कम मात्रा में पेट में जाने पर यह खतरानाक नहीं होती। अधिक मात्रा में पेट में जाने पर विष का कार्य कर रही है "डॉ. सरोज ने कहा।

"बात समझ में आ गई। हिरण, गेंडा आदि जीव किनारे पर खड़े होकर ऊपर का पानी पीते हैं। इस कारण पानी पर तैरती नीली-हरी शैवाल इनके पेट में अधिक जाती है। हाथी, भैंसा, दरियाई घोड़ा कुछ गहरे पानी में जाकर पानी पीते हैं। पीने से पहले वे पानी को बहुत हिला देते हैं। इस कारण उनके द्वारा पीए पानी में नीली-हरी शैवाल की मात्रा कम होती है। यही कारण है कि एक ही तालाब का पानी पीने पर भी हाथी भैंसा आदि नहीं मर रहे।" जगवीर ने कहा। रहस्य की गुत्थी सुलझते देख जगवीर के चेहरे से तनाव की रेखाएं कुछ कम हो गई थी।

जंगलों में दूषित पानी पीने से जानवरों की मृत्यु हो रही है

"आन्टी जी एक बात समझ नहीं आ रही? तालाब बने बहुत अधिक समय नहीं हुआ फिर इतनी नीली-हरी शैवाल कैसे पैदा हो गई?" राहुल ने प्रश्न किया।

"उधर देखो वह दरियाई घोड़ा क्या कर रहा है?" डॉ. सरोज ने एक ओर इशारा करते हुए प्रश्न किया। सभी ने उसी दिशा की ओर अपना मुंह घुमा दिया। दरियाई घोड़ा पानी में मल त्याग रहा था।

"समझ गया" रोहित बोला।

"क्या समझ गए?" जगवीर ने पूछा।

"बहुत से जानवर बाहर से चर कर आते हैं और मल त्याग इस सरोवर में करते हैं। सरोवर के जल में पोषक तत्वों नाइट्रोजन, फास्फोरस आदि की मात्रा निरन्तर बढ़ती जा रही है। प्रचुर मात्रा में पोषक तत्वों के मिलने के कारण ही नीली-हरी शैवाल तेजी से बढ़ रही है।" रोहित ने कहा।

"अब क्या होगा?" जगवीर ने चिन्तित होते हुए पूछा।

"उपाय एक ही है कि इस सरोवर से पानी पीने से जानवरों को रोका जावे। ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि जानवरों को पीने का साफ पानी कहां मिलेगा?" डॉ. सरोज ने नई समस्या बताते हुए कहा।

"नो प्रोब्लम यह तालाब तो मैंने गाँव वालों के सहयोग से बनाया है। यहां से कुछ ही दूरी पर एक झरना है, जानवर पहले वहीं पानी पीया करते थे। मैं आज ही गांव वालों से बात कर तालाब को साफ करवा देता हूँ।' जगवीर ने कहा। समस्या का समाधान मिलने से सभी प्रसन्न थे।

संपर्क करें:
विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी
पूर्व प्रधानाचार्य
2 तिलक नगर पाली (राजस्थान)
फोन नं. 02932 220580, 224539
ईमेल:vishnuprasadchaturvedi20@gmail.com